ऐसा आवत दिल हुकमें

ऐसा आवत दिल हुकमें, यों इस्कें आतम खड़ी होए।
जब हक सूरत दिल में चुभे, तब रूह जागी देखो सोए।।

नींद उड़े रहे न सुपना, और सुपने में देखना हक।
मेहर इलम जोस हुकमें, हक देखिए बेसक।।

रूह तेती जागी जानियो, जेता दिलमें चुभे हक अंग।
जो अंग हिरदे न आइ्या, रूह के तेती फरामोसी संग।।

मोहे दिलमें हुकमें यो कह्या, जो दिलमें आवे हक मुख।
तो खड़ा होए मुख रूह का, हकसों होए सनमुख।।

महामत हुकमें केहेत हैं, जो होवे अर्स अरवाए।
रूह जागे का एह उद्दम, तो ले हुकम सिर चढ़ाए।।